Bihar Board Class 6 Social Science Geography Notes Chapter 9 बिहार दर्शन-1

पाठ का सारांश

बिहार दर्शन में बिहार के ऐतिहासिक स्थलों के बारे में हमें जानकारी मिलती है। इसकी जानकारी के लिए मध्य विद्यालय में पढ़ने वाली रेशमा अपने वर्ग शिक्षक और छात्रों के साथ बोध गया, राजगीर, नालंदा और पावापुरी के ऐतिहासिक स्थलों को देखने जा रहे हैं। शिक्षक ने बच्चों को अपने साथ कलम, डायरी, पानी की बोतलों को रखकर सुबह 6 बजे सब कोई चलें।

'बस के द्वारा सबसे पहले 'बोध गया' पहँच गये। सबसे पहले बच्चों ने महाबोधि मंदिर देखे । इस मंदिर को विश्व धरोहरों में ध्यानरत बुद्ध की प्रतिमा के दर्शन के बाद सभी ने मंदिर के पीछे स्थित बोधिवृक्ष को देखा । इसी वृक्ष के नीचे गौतम को ज्ञान प्राप्त हुआ था और वे गौतम बुद्ध कहलाने लगे। बोधिवृक्ष के नीचे बैठकर कई बौद्ध भिक्षु भगवान बुद्ध की आराधना कर रहे थे। इस मंदिर के बगल में स्थित मुचालिद सरोवर में मछलियों को दाना खिलाये ।

सरोवर में बहुत सारी मछलियाँ थीं। इतने सारे मछलियों को देखकर मन आनन्द से भर गया। मंदिर के ईद-गिर्द कई देशों ने भगवान बुद्ध की मंदिरें भी हैं। – इसके आगे फल्गू नदी के तट पर गया में स्थित 'विष्णुपद' मंदिर देखने के लिये गये । यहाँ भगवान विष्णु जी के पदचिह्न हैं।

इसी मंदिर को काले पत्थरों से रानी अहिल्याबाई ने बनवाया था। वहाँ के पुजारियों ने बताया कि प्रतिवर्ष आश्विन महीने के कृष्णपक्ष में यहाँ पितृपक्ष का मेला पन्द्रह दिनों के लिए लगता है। देश के कोने-कोने से आकर लोग पूर्वजों के मोक्ष प्राप्ति हेतु पिंडदाम करते हैं। विष्णुपद से सभी बच्चे राजगीर के गर्म जलकुंड में हाथ-पांव धोने से सभी की थकावट दूर हो गई। राजगीर चारों ओर पहाड़ियों से घिरा हुआ है। इन पहाड़ियों में गंधक है। इसलिए यहाँ से गर्म पानी का स्राव होता है। सभी ने मनियारमठ, जरासंध का अखाड़ा भी देखा और शांति स्तूप देखने पहाड़ी पर चले गये।

यह शांति स्तूप पहाड़ी पर स्थित सफेद गुम्बदाकार स्तूप है जिसकी चारों दिशाओं में बुद्ध की चार प्रतिमाएँ अलग-अलग मुद्राओं में दिखाई पड़ती हैं। पहाड़ी पर जाने के लिए रज्जूमार्ग से पहुँचे । पहाड़ी के शीर्ष पर स्थित शांति स्तूप अद्‌भुत दृश्य प्रदान करता है। यहाँ से चारों ओर पहाड़ियाँ दिखाई देती हैं। यहीं मगध के राजा अजातशत्रु और बुद्ध के बारे में शिक्षक ने बताया ।

राजगीर से आगे नालंदा पहुँचे । नालंदा में 5वीं सदी में स्थापित नालंदा विश्वविद्यालय के खंडहर अवशेष रूप में दिखाई दिया। यही विश्वविद्यालय ज्ञान-विज्ञान के अन्तर्राष्ट्रीय केन्द्र के रूप में विख्यात था।

यहाँ नामांकन के लिए प्रवेश परीक्षा होती है। देश-विदेश से लगभग 10 हजार छात्र यहाँ रहकर अध्ययन करते थे। बच्चों ने पुस्तकालय, छात्रावास को देखा।

https://www.evidyarthi.in/

यहीं पर एक संग्रहालय में कई दुर्लभ पाण्डुलिपियाँ और मतियाँ भी देखीं। यहीं से सब पावापुरी स्थित जलमंदिर देखने गये। तालाब के बीचों-बीच स्थित जलमंदिर में भगवान महावीर के दर्शन किये । तालाब में मछलियों और कमल के फूल प्राकृतिक रूप से मंदिर की शोभा देखने लायक थी। यही वह जगह है जहाँ भगवान महावीर ने शरीर त्यागकर महापरिनिर्वाण प्राप्त किया था। इस प्रकार हमलोगों ने बोधगया, राजगीर, नालंदा और पावापुरी के ऐतिहासिक स्थलों का भ्रमण किया। एक मनोरम प्राकृतिक स्थलों को देखकर मन आनन्दित हो गया । इसके आगे नवादा जिला के ककोलत जलप्रपात अपने ठंडे जल के लिए प्रसिद्ध है।

evidyarthi

https://www.evidyarthi.in/